अवशिष्ट देशी शब्द

[प्रस्तुत ग्रन्थ 'देशी शब्दकोश' के मूलभाग में हमने जैन आगमों, उनके विभिन्न व्याख्या-ग्रन्थों तथा आचार्य हेमचन्द्रकृत 'देशी नाममाला' के शब्दों का सप्रमाण और ससन्दर्भ संग्रहण किया है। लेकिन इनके अतिरिक्त उत्तरकालीन प्राकृत ग्रन्थों में प्रयुक्त देशी शब्द अवशिष्ट रह जाते हैं। उन अनेक ग्रन्थों के विद्वान् संपादकों ने अपने-अपने संपादित उन प्राकृत ग्रन्थों में देशी शब्दों का अलग से परिशिष्ट भी दिया है। उन शब्दों का हमने ज्यों का त्यों इस परिशिष्ट में संग्रहण किया है। हमने मूल देशी शब्द तथा उसके अर्थ/अर्थों का निर्देश मात्र किया है। 'पाइअसद्दमहण्णवो' में संगृहीत उत्तरवर्ती प्राकृत ग्रन्थों के देशी शब्दों का भी इसमें संग्रहण किया है। यह परिशिष्ट शोधकर्त्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।]

अ

अ—१ उपमा। २ सादृश्य। ३ उत्प्रेक्षा—इन अर्थों का सूचक अव्यय

अइअड्ड—अतिविकट—अड्ड विकटार्थे देशी

अइणिरुत्त—अति निश्चित

अइणीय—आनीत, लाया हुआ

अइन्नदुवार—बिना दरवाजा बंद किए

अइभल्ल—अतिभद्र

अइरवण्ण—अतिरम्य

अइरिप्प—कथाबंध

अइरुंद—विपुल

अउस—उपासक, पुजारी

अं—स्मरणद्योतक अव्यय

अंकिइल्ल—नट, नर्तक

अंगुमिय—पूरित

अंगुलिय—ईख का टुकड़ा

अंघो—भयसूचक अव्यय

अंछविअंछी—आकर्षण-विकर्षण

अंतल्ली—१ पेट। २ लहर का मध्य

अंदुया—शृंखला

अंबभित्त—आम का टुकड़ा

अंबुपिसाय—राहु

अंभु—पत्थर

अकासिअ—पर्याप्त

अकोप्प—अपराध

अक्कसाल—बलात्कार

अक्का—माता

अक्खण—आसक्ति

अक्खणिय—व्याकुल

अखंपण—स्वच्छ, निर्मल

अखुट्ट—अखूट

अखुट्टिअ—अखूट, परिपूर्ण

अगंडिगोह—यौवन का उभार

अगिल—१अविच्छिन्न स्वर से रुदन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गल—अधिक

अग्गलय—अधिक

अग्गहणिया—सीमंतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाने वाला एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला उत्सव

अग्गहर—घर का अगला भाग

अग्गहिय—१ निर्मित, विरचित। २ स्वीकृत

अग्गिआय—इन्द्रगोप, क्षुद्रकीट-विशेष

अग्गीवय—घर का एक भाग

अग्गुच्छ—प्रमित, निश्चित

अग्गोयर—उपहार

अचियंत—अनिष्ट, अप्रीतिकर

अच्छक्क—असमय, अनवसर

अच्छरा—चुटकी, चुटकी की आवाज

अच्छुक्क—अक्षि-कूप-तुला, आंख का कोटर

अच्छुद्धसिरि—इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असंभावित लाभ

अच्छोडाविय—बंधित, बंधाया हुआ

अच्छोडिय—आकृष्ट, खींचा हुआ

अजड—१ शीघ्र करने वाला। २ जार, उपपति

अजणिक्क—सायंकालीन भोजन

अजम—१ सरल। २ अजवाइन

अज्जम—ऋजु

अज्झोलिया—बार-बार दोहन करने योग्य गाय

अट्टण्ण—आर्तज्ञ

अट्टल—अनपराध

अट्टवसट्ट—अत्यन्त खिन्न

अट्ठिलिय—अस्थि

अड—उद्यान, बगीचा

अडपल्लण—वाहन-विशेष

अडयण—कुलटा, व्यभिचारिणी

अडवडण—स्खलना, रुक-रुककर चलना

अडा—प्रलंबित केश

अडाल—बलात्

अड्डवियड्ड—अस्त-व्यस्त

अड्डय—शस्त्र-विशेष

अड्डाय—वक्र

अड्डिम्म—अतिरिक्त

अणउंछिय—अपृष्ट, अनपूछा

अणक्ख—१ लज्जा। २ क्रोध। ३ अपवाद

अणखालय—अस्खलित

अणग्गपल्लट्ट—पुनरुक्त

अणड—अनृत, झूठा

अणरहू—नववधू

अणहवणय—तिरस्कृत, भर्त्सित

अणहुल्लिय—जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह

अणालि—वक्रता

अणिभ—मुख, मुंह

अणियच्छिय—देखने में असमर्थ

अणिरिक्क—परतंत्र, पराधीन

अणुअज्झिय—प्रयात, प्रतिजागरित

अणुअत्थ—प्रचुर

अणुज्झिअअ—१ प्रयत, प्रयत्नशील। २ सावधान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तुण—निरभिमानी
अणुदिव—प्रभात, प्रातःकाल
अणुमग्ग—पीछे-पीछे
अणुव्वाय—अखिन्न
अणुहुंडिय—अनुभुक्त
अणोलिया—गिल्ली, डोली
अण्णसअ—आस्तृत
अण्णासय—विस्तृत, बिछाया हुआ
अण्णोल—प्रभात
अत्तिल्ल—अत्यन्त
अत्तिहरी—दूती, समाचार पहुंचाने वाली स्त्री
अत्थक्क—अनवसर
अत्थक्कि—अकस्मात्
अत्थाइया—गोष्ठी-मण्डप
अत्थोडिय—आकृष्ट, खींचा हुआ
अथक्क—अस्थिर
अद्दुमाअ—पूर्ण, भरा हुआ
अद्धघरणी—नववधू
अद्धच्छिपेच्छिअ—इधर-उधर दृष्ट
अद्धच्छिपेच्छिरि—इधर-उधर देखना
अद्धद्धा—दिन अथवा रात्रि का एक भाग
अद्धर—प्रच्छन्न, गुप्त
अन्नाहुत्त—पराङ्मुख
अपंडिअ—विद्यमान
अपिट्ट—पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ
अपुण्ण—आक्रान्त
अप्पाअप्पि—उत्कण्ठा, औत्सुक्य
अप्पाण—निर्बल
अप्पुण—स्वयं
अप्पुण्ण—पूर्ण
अप्फरिअ—अधिक खाने से होने वाला पेट का उभार—आफरा इति भाषायां—'अप्फरियपोट्टो'
अप्फाहेंत—संदेश देता हुआ
अबहिट्ठ—मैथुन
अब्बा—माता
अब्बो—माता का सम्बोधन
अब्भडवंच—पहुंचाने जाना
अब्भहर—अभ्रक
अब्भिट्ट—अभिगत
अब्भिट्ठ—संगत, सामने आकर भिड़ा हुआ
अब्भिड—संग्राम
अब्भिडिअ—समागत
अभिणिव्वागड—भिन्न परिधि वाला
अभिमर—हत्या
अभुल्ल—अभ्रान्त—अभ्रान्त इत्यर्थे देशी
अमयघडिय—चन्द्रमा, चांद
अमल—तेजहीन
अमार—१ नदी के मध्य का द्वीप। २ कमठ
अम्मच्छ—असंबद्ध
अम्मण—कितना
अम्माहीरय—राग, ध्वनि-विशेष
अम्हत्त—प्रमृष्ट, प्रमार्जित
अयंगम—शिथिल शरीर
अयडणा—कुलटा
अयुजरेवइ—अचिर-युवति, नवोढा
अरणि—१ रास्ता। २ पंक्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरणेट्टय—पत्थरों के टुकड़ों से मिली हुई सफेद मिट्टी
अरलाअ—१ चिरिका । २ मशक
अरि—चक्र
अरोर—धनाढ्य, दरिद्रता से मुक्त
अलंड—आरोप
अलवलवसह—दुष्ट बैल
अलियल्ल—व्याघ्र
अलियल्लि—व्याघ्री
अलिल्लह—१ छन्द-विशेष । २ अप्रयोजक, नियम रहित
अलिसार—क्षीर
अलीढा—मिथ्याचारिणी कुलटा
अल्ल—१ कम्प—कम्पे देशी । २ आलीन
अल्लय—आंवला
अल्लविअ—दिया गया
अल्लि—व्याघ्र
अल्लिय—भौंरा
अल्लिल्ल—भ्रमर
अवअण्ह—उलूखल
अवआर—लोकयात्रा
अवइज्झिय—त्यक्त
अवउडग—गले को मरोड़ कर बांधना, बंधन का एक प्रकार
अवऊढ—व्यलीक
अवंग—अपामार्ग
अवंगु—खुला, अनावृत
अवकुम्भाणिका—विलास
अवक्ख—निस्तेज
अवखा—चिंता
अवगद—आक्रान्त
अवगल—आक्रान्त
अवगिंचण—पृथक्करण
अवडुक्किय—कूप में गिरकर मरा हुआ
अवडल्लिय—कूप आदि में गिरा हुआ
अवमिच्चअ—उधार पर खरीदा गया
अवरज्ज—गत दिवस
अवरत्तय—अनुताप, पश्चात्ताप
अवरिज्ज—१ अद्वितीय । २ उत्तरीय
अवरुंडिय—आलिङ्गित, व्याप्त
अवरुप्पर—परस्पर
अवरोप्पर—परस्पर
अवलुय—चित्तखेद
अवसण्ण—झरा हुआ, टपका हुआ
अवसरिअ—विरह
अवसेरी—चिंता
अवहाडिय—उत्कृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह
अवहिट्ठ—१ अभिमानी । २ मैथुन
अवहोअ—विरह, वियोग
अवाडिअ—वञ्चित, प्रतारित
अवाहिय—अध्यासित
अविउत्थग—स्थान-विशेष
अविउल—अनुद्विग्न
अवियज्झ—आयत्त, प्राप्त
अविरिक्क—सायंकालीन भोजन
अविहंग—स्वभाव से—स्वभावतः इत्यर्थे देशी
अविहंडिय—परिपूर्ण
अविहिअ—मत्त, उन्मत्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव्वारिट्ठि—नटखटपन
अव्वो—अहो
असआणा—बुभुक्षा, भूख
असइ—अभाव, अविद्यमानता
असराल—१ विकराल । २ अश्वशाला
असालिय—सर्प की एक जाति
असाहार—अतुल, अनुपम
असुहावणय—अशोभन
अस्संगिअ—आसक्त
अहट्ट—प्रपंच
अहद्ध—स्नेह-रहित
अहासंखड—निष्कम्प, निश्चल
अहिउत्त—व्याप्त, खचित
अहिट्ठिय—हर्षित
अहिरिअ—शोभाहीन, विच्छाय
अहिरीमाण—१ अमनोहर । २ अलज्जाकारक
अहिरेइअ—परिपूर्ण
अहिरोइय—पूर्ण
अहिहरअ—देवालय
अहेल्ल—ईश्वर

आ

आ—१ स्मरण, याद । २ समन्तात्, चारों ओर
आअ—दही
आअट्टिआ—१ परायत्त । २ नववधू
आअर—मुसल
आअलण—रतिगृह
आअल्ल—केशबंध
आअल्लय—आकांक्षा
आअल्लियय—उत्कण्ठित
आइंधण—परिधान
आउल्लय—जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण-विशेष
आकड्डिय—बाहर निकाला हुआ
आकासिय—पर्याप्त, काफी
आगमेसि—आगामी
आडंबर—पटह
आडविअ—चूर्णित
आडियत्तिय—१ शिविका-वाहक पुरुष । २ सुभट
आडुंभण—गड़बड़
आडोर—चंडाल, श्वपच
आणक्क—तिर्यक्, तिरछा
आणिक्क—तिर्यक्-तिर्यगर्थे देशी
आदअ—दर्पण
आप्पण—पिष्ट, आटा
आब्भिट्ट—भिडना
आभिट्ट—१ प्रवृत्त । २ समभिगत, जाना हुआ
आभिट्ट—भिड़ना
आभिडिय—१ भिड़ा हुआ । २ प्रवृत्त
आभेडिय—प्रवृत्त
आमल्लअ—धम्मिल्ल-रचना, जूडा बांधने की कला
आयल्ल—१ व्याकुल । २ चाह । ३ कामपीडा
आयल्लया—बेचैनी
आयल्लिय—१ आक्रान्त, व्याप्त । २ उत्कंठित । ३ पीड़ित
आरंतिअ—मालाकार
आरायण—युद्धरचना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org